Roll No. ……..

DPJ–104

मुहूर्त विचार

फलित ज्योतिष में डिप्लोमा (डी. पी. जे.-12 / 16 / 17)

प्रथम सेमेस्टर, सत्र 2018

समय : 3 घण्टा पूर्णांक : 80

नोट : यह प्रश्न पत्र अस्सी (80) अंकों का है जो तीन (03) खण्डों 'क', 'ख' तथा 'ग' में विभाजित है। शिक्षार्थियों को इन खण्डों में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

खण्ड–क

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

नोट : खण्ड 'क' में चार (04) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं। प्रत्येक प्रश्न के लिए उन्नीस (19) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल दो (02) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. सर्वार्थ सिद्धियोग का वर्णन कीजिए।
2. नक्षत्राधिपति का उल्लेख कीजिए।
3. अधिमास व क्षयमास के लक्षण को बताते हुए उसमें वर्जित कार्यों का वर्णन कीजिए।
4. गृहारम्भ व विवाह मुहूर्त का वर्णन कीजिए।

खण्ड–ख

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

नोट : खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं। प्रत्येक प्रश्न के लिए आठ (08) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल चार (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. आधान मुहूर्त का विवेचन कीजिए।
2. आनन्दादि योगों के नाम लिखिये।
3. चूड़ाकरण मुहूर्त लिखिये।
4. उपनयन मुहूर्त लिखिये।
5. नामकरण मुहूर्त पर प्रकाश डालिए।
6. काकिणी विचार लिखिये।
7. तिथियों के स्वामी का नाम लिखिये।
8. गुरु-शुक्रास्त में वर्ज्य कार्यों का वर्णन कीजिए।

खण्ड–ग

(वस्तुनिष्ठ प्रश्न)

नोट : खण्ड 'ग' में दस (10) वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिये गये हैं। प्रत्येक प्रश्न के लिए एक (01) अंक निर्धारित है। इस खण्ड के सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

सही उत्तर का चयन कीजिए :

1. चतुर्थी तिथि का स्वामी कौन है ?
   (अ) अग्नि
   (ब) गणेश
   (स) ब्रह्मा
   (द) गौरी

2. चर संज्ञक नक्षत्र है :
   (अ) चित्रा
   (ब) स्वाती
   (स) विशाखा
   (द) अश्विनी

3. आश्लेषा के द्वितीय चरण में जन्म हो, तो जातक फल होता है :
   (अ) जातक का नाश
   (ब) मातृनाश
   (स) भ्रातृनाश
   (द) धननाश

4. भरणी नक्षत्र का अधिपति है :
   (अ) अग्नि
   (ब) यम
   (स) ब्रह्मा
   (द) चन्द्रमा

5. मद्रा कहते हैं :
   (अ) विष्टिकरण को
   (ब) बालव को
   (स) कौलव को
   (द) गर को

6. क्षत्रियों का अधिपति ग्रह है :
   (अ) गुरु-शुक्र

(ब) सूर्य-मंगल

(स) शनि

(द) चन्द्रमा

7. मद्रा रहती है :

(अ) शुक्लाष्टमी पूर्वार्द्ध में

(ब) शुक्ल सप्तमी पूर्वार्द्ध में

(स) शुक्ल नवमी पूर्वार्द्ध में

(द) शुक्ल दशमी पूर्वार्द्ध में

8. वृश्चिक राशि में चन्द्रवास होता है :

(अ) पूर्व दिशा में

(ब) पश्चिम दिशा में

(स) उत्तर दिशा में

(द) दक्षिण दिशा में

9. गृहनिर्माण में देवस्थान/देवगृह की दिशा होती है :

(अ) अग्नि कोण

(ब) नैर्ऋत्य कोण

(स) दक्षिण दिशा

(द) ईशान कोण

10. गृहनिर्माण में मेष मास में राहु मुख रहता है :

(अ) वायव्य कोण में

(ब) नैर्ऋत्य कोण में

(स) आग्नेय कोण में

(द) ईशान कोण में